तारीख : 02 मार्च, 2014

लखनऊ में मोदी

–अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

लखनऊ में नरेन्द्र मोदी की रैली को जनता का भारी समर्थन मिला। दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर जाता है। यह देश का सबसे बड़ा राज्य है जहां से लोक सभा में अस्सी सदस्य आते हैं। 1990 के दशक में जब भाजपा मजबूत होकर उभरी थी उत्तर प्रदेश ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। 1991 के आम चुनाव में भाजपा को अविभाजित उत्तर प्रदेश में 85 में से 52 सीटें मिली थीं। 1996 में यह संख्या बढ़कर 58 (+2 सहयोगियों के लिए) 1988 में 50 हो गई। इसके बाद भाजपा की ताकत लगातार कम होती चली। भाजपा को 1999 में 29 सीटें मिलीं। 2004 और 2009 में उसे केवल दस सीटें मिली। अगर भाजपा को दिल्ली में सरकार बनानी है तो उसे 1990 के दशक वाला आंकड़ा हासिल करना होगा। क्या यह संभव होगा?

उत्तर प्रदेश में चुनावी मुकाबला मुख्य रुप से भाजपा, समाजवादी पार्टी और बसपा के बीच है। 2009 में कांग्रेस ने आश्चर्यजनक 22 सीटों पर विजय हासिल की थी। वर्तमान में संकेत मिल रहे हैं कि वह हाशिये पर चली जाएगी। आम आदमी पार्टी खबर बनाने की कोशिश में हैं और लोगों का ध्यान खींचने में लगी हुई है। लेकिन इसका उत्तर प्रदेश के मतदाताओं पर कोई खास असर पड़ने वाला नहीं है।

बसपा और सपा के शासन की पिछली उपलब्धियां संदेहास्पद रही हैं। समाजवादी पार्टी का शासन दुर्भाग्यपूर्ण है। जब से वह सत्ता में हैं उत्तर प्रदेश में कानून और व्यवस्था की स्थिति चरमरा गई है। सामाजिक और साम्प्रदायिक तनाव बढ़ा है। उत्तर प्रदेश में अनगिनत साम्प्रदायिक दंगे हो चुके हैं। बसपा का पिछला शासनकाल जबरदस्ती वसूली वाला रहा। उसने निरंकुश शासन किया। ये दोनों दल पिछले 10 वर्ष से यूपीए को सत्ता में बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। यूपीए को समर्थन देने की रणनीति अदला–बदली की है। आदान–प्रदान की व्यवस्था सीबीआई को आसानी से वश में करने के लिए की गई हैं क्योंकि इन दोनों पार्टियों के नेताओं के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले लंबित हैं।

उत्तर प्रदेश की जनता का बदलता मूड दिखाई दे रहा है। जातिगत ध्रुवीकरण का मुद्दा पीछे जा चुका है। सामाजिक ध्रुवीकरण का प्रभाव कुछ हद तक कम हो गया है हांलाकि पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। जिन आठ रैलियों को नरेन्द्र मोदी ने संबोधित किया उनमें लोगों की भारी भीड़ दिखाई दी। उत्तर प्रदेश में आज प्रमुख मुद्दा शासन का है। उत्तर प्रदेश में आंकांक्षापूर्ण राजनीति स्पष्ट दिखाई दे रही है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में पूरी तरह बदलाव आया है। जब मोदी ने प्रसून जोशी की एक कविता से अपना भाषण समाप्त किया मुझे 1977 के आम चुनावों के चुनावी भाषण याद आने लगे जिनमें वक्ता दिनकर जी की प्रसिद्ध पंक्तियों से अपना भाषण समाप्त किया करते थे, ''सिंहासन खाली करो जनता आती है।''